प्राक्कथन

प्राक्कथन

पत्रकारिता मूलतः मानव–समाज के बीच जन्मी एवं मानव समाज के अंदर ही स्वीकृत रचना कर्म है। अतः स्वाभाविक रूप से उसके अन्तर्गत मानव–समाज के क्रियाकलापों का लेखा–जोखा रहता है। पत्रकारिता मानव जीवन के भौतिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ मूल्यगत परिपक्वता का मार्ग प्रशस्त करती है। मूल्य मनुष्य को अपने जीवन, अपने पर्यावरण, अपने आप से समाज और संस्कृति से ही नहीं, अपितु मानव–अस्तित्व व अनुभव से प्राप्त होते है।

मेरे इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य मानवीय मूल्यों के दायित्व को समाज के समक्ष रखना है। इस शोध कार्य के द्वारा इस बात की पुष्टि होती है कि पत्रकारिता जीवन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। जनमत को मानवीय मूल्यों से परिचित कराने में और समाज का दिशा–निर्देशन करने में पत्रकारिता महत्त्वपूर्ण कार्य करता हैं। समाज में आज भी मूल्सों का संचार हो रहा हैं जो मनुष्यों के बीच सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, आत्मशुद्धि, नैतिकता, लोकमंगल और लोककल्याण की भावनाओं को बनाए रखती हैं।

यह मानवीय मूल्य एक ऐसी आचार–संहिता या सद्‌गुण है, जिसे पत्रकारिता के माध्यम से समाज में स्थापित किया जाता हैं और प्रत्येक मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन–पद्धति का निर्माण करता हैं। मेरे इस शोध कार्य का मुख्य विषय है "पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की अवधरणा"। इसमें कुल छः अध्याय हैं इस शोध कार्य के द्वारा पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का स्थान और समाज में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्ता पर चर्चा की गई हैं।

मैने **प्रथम अध्याय** में पत्रकारिता का सामान्य परिचय दिया है। इसमें पत्रकारिता का अर्थ एवं पारिभाषिक स्वरूप, पत्रकारिता का उदभव एवं विकास, पत्रकारिता का उद्देश्य, पत्रकारिता की आवश्यकता एवं महत्त्व और पत्रकारिता के विविध क्षेत्र के बारे में स्पष्टीकरण दिया हैं।

दूसरे अध्याय में पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों के अवलोकन की चर्चा की है जिसमें मानवीय मूल्य का अर्थ, पत्रकारिता– मानवीय मूल्यों की नियामिका, पत्रकारिता–मानव समाज के क्रिया–कलापों का लेखा जोखा, पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन, पत्रकारिता समाज की दिशा–दर्शक एवं पत्रकारिता में मानवीय गुणों और मूल्यों का पोषण आदि का स्पष्ट रूप से विवरण दिया गया है।

तीसरे अध्याय में पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का अध्ययन एवं विश्ले"ाण का एक सशक्त रूप में चर्चा की गयी है। पत्रकारिता और मानवीय मूल्य, आज के युग में मानवीयता की आवश्यकता एवं महत्व, मानव – मानवता एवं पत्रकारिता, पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का स्थान और वर्तमान काल में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का विस्तृत विवरण दिया गया है।

चौथे अध्याय में विभिन्न वर्गों की पत्रिकाओं में मानवीय मूल्यों का स्थान क्या है? इस विषय पर चर्चा किया गया है। इसमें विभिन्न वर्गों की पत्रकारिता का परिचय (बाल पत्रकारिता, युवा पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता), समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के द्वारा मानवीय मूल्यों का अवलोकन, ग्रहणीयता एवं प्रतिपुष्ठि, विभिन्न वर्गों की पत्रिकाओं में मानवीय मूल्यों का महत्व एवं उपयोगिता का विवरण एवं स्पष्टीकरण दिया गया है।

पाँचवे अध्याय में सामाजिक नव निर्माण में पत्रकारिता की भूमिका पर चर्चा की गयी है। इसमें पत्रकारिता के सामाजिक आदर्श और उद्देश्य, समाज में पत्रकारिता का स्थान, पत्रकारिता का सामाजिक योगदान ओर आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता का उल्लेख किया गया हैं।

अंत में मैंने कोयम्बत्तूर क्षेत्र के कुछ विद्वज पत्रकारों से साक्षात्कार किया है। उनसे मैंने 'पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का क्या स्थान है'? इस विषय से सम्बन्धित सुझाव लिए।

'अंत भला तो सब भला' इस कथन से मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। किसी भी पुस्तक की सफलता का पूरा आनंद तभी मिलता है जब उसका निष्कर्ष भी अच्छा हो। इन पाँच अध्यायों के बाद मैंने उपसंहार में इस शोध कार्य का निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

दायित्वों का स्पष्टीकरण देना और उनको प्रतिफलित करना ये दोनों अलग–अलग मुद्दे हैं। इसको पूर्ण रूप से उन्नत रूप में कामयाबी के पथ पर लाना और उसे एक उदात रूप देना उक चुनौती ही नहीं बल्कि जोखिम भरा काम भी है। इसकी पुष्टि करते हुए आगमी भविष्य में एक गहरी और कठोर गंभीरतापूर्ण नीव की स्थापना करना ही मेरे शोध कार्य का उद्देश्य एवं लक्ष्य है।

मैंने अपने इस शोध कार्य के लिए 'पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की अवधारण' शीर्षक को इसलिए चुना क्योंकि मानवीय भावना युक्त समाज ही पत्रकारिता का आधार स्तम्भ है, जो श्रेष्ठ समाज का निर्माण करता है।

मेरे इस शोध कार्य में अगर कोई त्रुटियाँ हुई हो तो कृपया उदार भाव से क्षमा करें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह शोध कार्य आगे आनेवाली छात्राओं के लिए एक मार्गदर्शन का कार्य करेगा।